ISSN No-2031-5063 Vol.1,Issue.VII/Jan 2012pp.1-4

Research Paper

ऐतिहासिकता के संदर्भ में डॉ. रामकुमार वर्मा के काव्य में

प्रा. संगीता जगताप
(विभागाध्यक्ष)
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय चिखलदरा
जि.अमरावती महाराष्ट्र

प्रस्तावना :–

किसी भी देश के साहित्य का निर्माण लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर किया जाता है। साहित्य वह माध्यम है जो मानव जीवन और सामाजिक संबंधों को अधिकाधिक मजबूत बनाता है। चाहे वह पश्चिम के टॉलस्टॉय का साहित्य हो, चाहे भारत के रामचंद्र शुक्ल, रामकुमार वर्मा, जयशंकर प्रसाद द्वारा भारत की विविधता में रचा बसा साहित्य हो, उसका उद्देश केवल लोगों को रसास्वादन करना ही नहीं बल्कि विशाल ज्ञान क्षेत्र का विस्तार करना है।

ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी डॉ. रामकुमार वर्मा। जिनका जन्म 5 सितंबर 1 905 में मध्यप्रदेश के सागर शहर में हुआ था। व्यक्ति के जीवन का घटनाक्रम निश्चित ही उसकी मानसिकता एवं चिंतन को प्रभावित करता है। इसी प्रकार डॉ. रामकुमार वर्मा के पारिवारिक परिवेश पर दृश्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि उन्हें राश्ट्रप्रेम विरासत में मिला था। उनके पुरखों ने अंग्रेजों के विरूध्द नानासाहेब पेशवा और रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर युध्द किया था। उनके पिता लक्ष्मिप्रसाद को कुल पंद्रह संताने हुई उसमें से रामकुमार वर्मा ग्यारवीं संतान थे। वर्माजी के पिताजी डेप्युटी कलेक्टर थे उनका अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्तिमत्व था। माता श्रीमती राजरानीदेवी अनन्य विदुशि थी राजरानीदेवी देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत थीं। वह 'वियोगिनी' उपनाम से काव्यसृजन करती थी। वास्तव में माता व्यक्ति की प्रथमगुरू होती है यह तथ्य डॉ. वर्मा के व्यक्तिमत्व से भी जुड़ा रहा है। उनकी माता सुबह गीत सुनाकर उन्हें नींद में से जगाता थी, यही घटना उन्हे साहित्यिक बनने के लिए प्रेरणादायी रही थी। उनकी माता को राट्रप्रेम एवं स्त्रियों की समस्याओं से अधिक लगाव था, इसलिए यह प्रेरणा उन्हे अपने माता–पिता से विरासत में ही मिली। साथ ही 17 वर्श की आयु में ही वर्माजी ने असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया था। वे गांधीजी के विचारो से अत्याधिक प्रभावित हुये थे, इसलिए उन्होंने असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया और इसी असहयोग आंदोलन में गीत लिखने का उन्हें मौका मिला जो भावना आगे चलकर कवि का रूप धारण करती रही। इसी लिए डॉ. नगेंद्र कहते ''है व्यक्ति और उसकी कृति में रक्त का संबंध होता है। अतएवं एक का विश्लेशण दूसरे को साथ लिये बिना असंभव है।'' 1. अतः यही कहना होगा कि रामकुमार वर्मा परिवार की आभा और उनके आंतरिक गुणों से ही अधिक प्रकाशमान हुये थे। वे पाश्चात्य और भारतीय धारा का मिलन करवाना चाहते थे यही कारण था कि वे घर पर धोती बनियान पहनना पसंद करते थे और बाहर जाते समय कोट टाई ही पसंद करते थे ,उनका मानना था कि रहन सहन से आपके व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। इसी वजह से डॉ. चंद्रिका प्रसाद वर्मा ने उन्हें 'मयुरपंखी व्यक्तित्वावाले डॉ. रामकुमार वर्मा हिन्दी साहित्य के इंद्रधनुशी श्रंगार है। उनका काव्य व्यक्तित्व रंग बिरंगा है। कहते हैं उन्होंने अपने जीवन में स्कुल के अध्यापक के रूप में शुरूआत की थी2 प्रोफेसर के रूप में अंत में निवृत्त हुये थे। 1940 में नागपूर विश्वविद्यालयने उन्हें ''हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास'' पर उपाधि देकर सन्मानित किया। हालांकि 'कबीर का रहस्यवाद' उनका प्रथम शोधनिबंध रहा है।

उन्हे विविध पुरस्कारों से सन्मानित किया गया था । जिनमे सर्वप्रथम "श्री वेणी माधव खन्ना" पुरस्कार मिला। 1936 में देव पुरस्कार चित्ररेखा काव्य के लिए दिया गया। 1940 में हिन्दी साहित्य का आलोचनात्म इतिहास के लिए रत्नकुमार पुरस्कार मिला। 1950 में उत्तरप्रदेश संस्थान पुरस्कार मिला था। और उन्हें 1960 – 1970 का दो बार कालिदास पुरस्कार मिला। 1984–85 में उत्तरप्रदेश सरकार ने भारत–भारती पुरस्कार से सन्मानित किया 1988 में मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने 'भवभूति' पुरस्कार प्रदान दिया। 1963 में भारत सरकार ने पद्मभूशण पुरस्कार दिया। श्रेश्ठ रचनाकार के रूप में 1967 का रत्न पुरस्कार मिला। 1968 में वापस्पति उपाधि मिली। 1984 में उनके कतित्व से प्रभावित होकर स्विजरलैंड के मूर विश्वविद्यालय ने उन्हें डी.लिट की मानद उपाधि प्रदान की इस उपाधि के दौरान भाशण में वर्मा ने कहा था कि '' यह अलंकरण मुझे प्रेरणा देता हे कि मैं भारत और स्विजरलैंड के बुध्दिजीवियों के बीच सेतू बन कर देशों के साहित्य और संस्कृति को बहुत निकट लाउँ''3

बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी रामकुमार वर्मा की ऐतिहासिक काव्य शैली आकर्शित करती रही। इतिहास एक ऐसी प्रक्रिया है जो अतीत से चलकर आती है और वर्तमान में आकर पुश्ट होती है। मनुश्य सामाजिक प्राणि है इसी लिए वह भविश्य के लिए अपनी पहचान छोड़ जाता है यही इतिहास में होता है। उदाहरण देखा जाए तों इतिहास एक मिट्टी का गोला है उसे इतिहासकार, साहित्यकार आकार, प्रकार, रंग रूप भरकर उसे आकर्शक बनाता है। मूल वही है परंतु रूप अलग है।

ऐतिहासिकता के प्रमाण को जानने के लिए इतिहास की परिभाशा, उसकी पहचान करवाना जरूरी है। इसके पहले यह समझना होगा कि इतिहास और साहित्य का क्या संबंध है? तब यही तथ्य सामने आता है कि इतिहास का संबंध मानव से है और मानव का संबंध व्यावहारिक जीवन से है।,इन दोनों संबंधो से ही इतिहास का निर्माण होता है। इसीलिए मनुश्य इतिहास का अनुयायी भी है, और स्वामी भी।

वैसे तो इतिहास की परिभाशा करना कठिन कार्य है, क्योंकि इतिहास की अनेक शाखायें फैली हैं। इसीलिए उनके किनारों को बध्द करना असंभव है, परंतु इतिहास में दो शब्द है इति+आस अर्थात ऐसा ही हुआ था। अंग्रेजी में इसे 'हिस्ट्री' शब्द प्रयुक्त है। मुख्यता इतिहास का संबंध अतीत और व्यक्तियों से होने के कारण इतिहास का संबंध नाम, घटना, और तिथियों से जुड़ जाता है।

इस संदर्भ में ऐतिहासिक संकल्पनाओं को स्पश्ट करने के उपरांत डॉ. वर्मा के ऐतिहासिक कृतियों का मूल्यांकन करना नितांत समीचित प्रतीत होता है। जो इस प्रकार है
1. वीर हमीर 2. चितौंड की चिता 3. संत रैदास
''वीर हमीर''

यह डॉ. वर्मा की 1922 में रची गयी रचना है। इस खंडकाव्य का कथानक जोधराज कृत 'हम्मीर रासो' से लिया गया है। हम्मी रासो में हमीर और अल्लाउद्दीन के दुश्मनी का वर्णन किया गया है। वर्मा ने खंडकाव्य में केवल मंगोल, सरदास को शरणागतीपर देना और इससे कृध अल्लाउद्दीन का हमीर पर हमला करना, लड़ाई पर जाते जाते वह क्षत्राणियों को, अगर हार जाऊँ तो जौहर व्रत का पालन करना यह समझाना है। हालॉकि अल्लाउद्दीन की फौज को हराकर हमीरे वापस लौटता है2 सैनिकोने की हड़बड़ी के कारण अल्लाउद्दीन के प्रदेश की पताका गढ़ की तरफ आते देखकर रानी यह समझती है कि हार हुई है, तब सभी महल की स्त्रियाँ जौहर कर लेती है इसप्रकार हमीर विजयी होकर भी हार जाता है। और खुद का सिर काटकर आत्मबलिदान कर देता है।

वीर हमीर में हमीर यह राजपूत है। राजपुत धैर्यवान, निर्भिक यौध्दा होते हैं। वे प्राण त्यागेंगे पर शरण मैं नहीं जायेंगे। जैसे उनकी शान में यह पंक्तियॉ दर्शाती है।

''राजपूती वीर होते साहसी बलवान है।
शक्ति से स्वाधीन रहना ही उन्ही की बात है।
नरक पीड़ा से अधिक वे मानतें दासत्व को।
फिर कहो क्या छोड़ सकते है कभी निजस्वत्व को।5

हमीर भारत के प्रत्येक व्यक्ति के रूप में दृश्टिगोचर होता है। जब भी दुश्मन ने हमपर आक्रमण किया, उसका मूँहतोड़ जवाब दिया गया भारत की आंतरिक व्यवस्था को उपर–उपर से जानकर दुश्मन बार–बार आक्रमण करता है पर उसे पराजित होकर ही जाना पड़ा परंतु फिर भी वह साहस से अल्लाउद्दीन का सामना करता है। इस प्रसंग को रामकुमार वर्मा इस प्रकार व्यक्त करते है।

''सत्य पर बलिदान होना ही हमारा धर्म है।
दीन दुखियों की बनाना ही हमारा धर्म है।
दुःख नही शरणागतीं के हेतू यदि तन भी कटे।
है मुझे धिक्कार यदि पूत्र तनिक भी पीछे हटे।6

जब–जब देशपर आक्रमण हुआ है तब–तब स्त्रियाँ असुरक्षित थी देश की स्त्रियों को निशाना बनाकर आक्रमणकारियों ने उन्हें बंधक बनाना, पटरानी बनाना आदि हथखंडे अपनाये थे। परंतु हमें नारी परतंत्र हो स्वीकार नहीं था, इसलिए वह युध्द में पराजय होने पर राज्य की प्रत्येक नारी को जौहरव्रत का पालन करने की सलाह देता है यह भावना निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त होती है।

'शत्रु दल का भूल कर क्यों नारियों पर हाथ हो?
जब तुम्हारा प्रेम–पुर्वक अग्नि से ही साथ हो।
हार हो तो नारियॉ सब भावना ऊँची भरे।
शांति हँसते हुए सब साथ मिल 'जौहर' करे।7

सैनिको की एक छोटीसी भूल के कारन–समस्त स्त्रियों को जौहर करना पड़ता है। राज्य की समस्त स्त्रियों के माध्यम से वर्माजी यही दर्शाना चाहते है कि स्त्री केवल मोम की गुड़िया नहीं है समय आने पर वह आत्मबलिदान भी दे सकती है। उसे अग्नि में भस्म होना मंजूर है, परंतु रंगीन जिदंगी उसे आकर्शित नहीं कर सकती वह अपनी शील की रक्षा के लिए कोई भी कदम उठा सकती है। ऐसे कितने ही उदाहरण दिये जा सकते है कि राणी लक्ष्मीबाई, जिजाबाई का, जिन्होंने इस देश को नयी पहचान दी।

शरणार्थियों और विश्वासघाती को हमने हमेशा अपनी जगह बता दी। मंगोल हमीर के शरण में आया था इसलिए उसे वह आदरपूर्वक ही रखता है जैसे उनकी पंक्तियाँ दर्शाती है।

''चंद्रिका यदि चंद्रमा को छोड़ दे, तो छोड़ दे।
मीन जल से नेह–नाता तोड़ दे, तो तोड़ दे।
पर वचन मंगोल को जो है दिया मैने अभी,
झूठ हो सकता नहीं वह यवन के बल से कभी।''

हमीर से विश्वासघात करनेाले उनके सचिव सरजन को दुश्मन के हाथों प्राणदंड दिया जाता है। हमीर की मृत्यु के बाद उसकी वीरता, साहस से प्रेरित अल्लादिन भी दुखी होता है वह रोते हुये कहता है....

'' किन्तु वीर हमीर की जिंदा रहेगी याद ही।
और रणथंभोर भी उससे रहें आबाद ही। ''

इसप्रकार ऐतिहासिक कथा का साहारा लेकर डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपनी कल्पनाशक्ति से नविन मानवीय मूल्यों की अभिसृजना प्रस्तुत की है। जिससे आधुनिक भारतीय समाज को एक नया निर्देश प्राप्त होता है।

चितौंड की चिताः

चितौड़ की चिता खंड काव्य की रचना 1927 में हुई। मध्यकालिन भारतीय राजपूत शौर्य व्रत पालन पर आधारित है। महारानी करूणा के चरित्र में राजपूत वीर क्षत्राणियों के सभी गुणों का चित्रण, वर्माजी ने किया है उनके माध्यम से जौहर व्रत का पालन करना दिखाया है। यह एक ऐतिहासिक कथानक है परंतु वर्मा ने उसमें रोचकता एवं सौंदर्य उत्पन्न करने के लिए कल्पना का सहारा लिया है।

बाबर ने राणा संग्रामसिंह को चुनौती दी थी कि इस्लाम स्वीकार करो या युध्दा के लिये तैयार हो जाओ। धर्म तथा मान अभिमान का प्रश्न था अतः उन्होंने युध्द करने का निश्चत किया था। राणा के पास सैन्य कम था। इसलिए ज्यादा दिन युध्द न लड़ सके घायल होकर उन्हे दम तोड़ना पड़ा था। रानी करूना दुख के सागर में डुब गयी। इस दौरान बाहदुरशाह भी आक्रमण की तैयारी मैं बैठे थे , रानी को रातदिन चिंता सताने लगी किस तरह उसका मुकाबला किया जाए। तभी रानी करूणावती हुमायूँ के नाम पत्र लिखती है और साथ में राखी भेज देती है। उसे विश्वास था बहन की राखी स्वीकार कर हुमायूँ उसकी रक्षा के लिये जरूर आयेंगा। परंतु बाहादुरशाह की सेना ने आक्रमन किया हुमायूँ की सेना दूर – दूर तक नजर नहीं आयी। रानी निराश हुई उसका सबकुछ छिना जा चुका था ,तभी सभी नारियों को जौहरव्रत के लिये तैयार किया स्वयं भी चिता में कूद पड़ी थी। इस खंड काव्य में रानी करूणावती राजपूत नारियों का प्रतिनिधत्व करती है। वह आर्य ललना है, जो अपने पति राणा संग्रामसिंह से अथाह प्रेम करती है परंतु पति के मृत्यू के बाद वह टूट जाती है जब अपना महत्व गवाँ देती है, तो खुद को और समस्त नारियों के बचाव के लिये उसे जौहर के लिये प्रवृत्त करती है। वर्मा इस बिचार को इस प्रकार व्यक्त करते है।

''सजनी ! अब आया है वह समय।
जब कि हम दे अपना परिचय,
वीर क्षत्राणी बन निर्भय,
करे जग में निज धर्मोदय'' 1.

रानी करूणादेवी के माध्यम से रामकुवार वर्मा नारीयों का पथप्रदर्शन करती है चितौड़ की चिता में रामकुमार वर्मा को समाज में कितनी ही ऐसी महिलाएँ है जो दुःख से, संकटों से हारकर रास्ता भटक जाती है, परंतु वर्माजी करूणादेवी के माध्यम से संदेश देना चाहते है कि स्त्री जाति का उस युग में बिना पति के सुरक्षित रहना संभव नही था इसलिए वह पतिता न बने, डॉ. वर्मा ने उसे सच्ची भारतीय नारी के रूप में जौहर होते दिखाया है। यह उनके ऐतिहासिकता एवं कल्पना शक्ति का सुंदर सृजन है।

संत रैदासः–

मध्यकाल में अनेक संत हुए अनमें से एक रैदास थे जो जाति से चर्मकार थे, वैसे रैदास के बारे में कम ही लिखा गया है । डॉ. रामकुमार वर्मा ने इतिहास को आधार बनाकर रैदास के

जीवन का सुंदर चित्रन चित्रित किया है।

प्रस्तुत काव्य में रैदास का जीवन क्रम दो घटनाओं से लक्षित होता है एक रामांनद का शिश्यत्व दूसरा झाला रानी का गुरूपद । रैदास बचपन से ही भगवत भक्ति में लीन रहते थे। निम्न जाति का होने के कारण माता उसे भक्ति के मार्ग से हटाना चाहती थी क्योंकि तत्कालीन समाज में शूद्रों को इश्वर आराधना का अधिकार न था। इसलिए उसके हाथ में चमड़ा औजार देकर अपना व्यवसाय करते के लिए मजबूर किया गया। बालक रैदास पिता की आज्ञा का पानल करता रहा। परंतु किसी साधु संत को नंगे पैर जाते देखता तो उन्हें बुलाकर एक जोड़ा पादत्रान दान दे देता था। एक दिन उनकी भेंट प्रेमानंद से हुई और, उन्हें रामानंद जैसे गुरू मिलते है। जब चित्तोड़ की झाली रानी गुरू बनाने के लिये आती है तब भी वह उन्हें मैं चमार जाति का हूँ स्पश्ट बताते हैं। वे अपने धर्म और जाति के नियमों को अच्छी तरह जानते थे इसलिए खुद को हमेशा दीन और नीच ही समझते थे। उनके विचार प्रस्तुत पंक्तियो में प्रयुक्त होते है–

''मैं यही निवेदन कर दूँ,
दुविधा मत मन मैं लावें,
श्री रामानंदाश्रम है,
उस और, वहॉ पर जावें।
वे गुरू है, उनकी शिश्या
बनकर सच्चा पथ पावें,
हम तो सेवक है, गुरू के
गौरव को क्यों ललचायें? ।8

संत रैदास के चरित्र के माध्यम से डॉ. रामकुमार वर्मा मध्यकाल में स्थित जातिव्यवस्था को दर्शाना चाहते है। उस काल में वर्ण व्यवस्था नुसार ही मनुश्य ने काम करने चाहिए यह निश्चित था। परंतु कबीर रैदास जैसे संत इस संसार को नयी पहचान देते हैं। इसीलिए वर्णव्यवस्था की लौचिकता का परित्याग कर भारतीय समाज अपनी कट्टरता को भूलकर वैमनस्य एवं जातियता के बवंडर में न फँसकर इस सत्य को कायम किया है क्योंकि भारत वर्श विभाजन के रूप में परिणाम भुगत चुका है । जो समाज में दुश्प्रचार करते है उन पर डॉ. रामकुमार वर्मा कड़ा प्रहार करते हैं –

''या किसी का कमण्डल उठा भागता,
किन्तु फिर लौटकर वह क्षमा माँगता।
या चिढ़ाता कभी ढोंगियों को चढा।
पढ़ दिया मंत्र उलटा जो उसने पढ़ा।

गुरू रामानंद के मुख से डॉ. रामकुमार वर्मा निम्नलिखीत पंक्तियाँ उद्रृत कर जाति व्यवस्था मिटाने का संदेश देते है।

''जाति पाँति तो भेद भाव की उठी गीत है,
मानवता के लिए एकता मधुर गीत है।
जागे शीघ्र समाज जो कि अति स्वार्थ सना है।
प्रभु के सम्मुख एक सदृश्य सब की रचना है। ''

अतः निश्कर्श यही निकलता है कि डॉ. रामकुमार वर्मा इतिहास की घटनाओं का आधार लेकर वर्तमान रूप में उसे जोड़ने में कामयाब हुये हैं। आज उनकी सभी बाते प्रासंगिक लगती है समाज को संदेश देती है। वहीं उनका खंडकाव्य वीर हमीर हो, चितौड़ की चिंता हो, चाहे संत रैदास हो । चूँकि किसी भी देश का इतिहास उस देश की संस्कृति की धरोहर होता है उसी के आधार से निकली यथोचित कल्पना का वर्णन करना रचनाकार की सौगात होती है। इसी लिए ऐसी रचनाएँ अमर हो जाती है।

इस प्रकार भारतवासियों को अपने कर्म ,कर्तव्य और नारी की स्थिति को ह्रदय के गहराई तक रामकुमार वर्मा आज भी हमें प्रासंगिक जान पढ़ते है। ऐसे ही साहित्यकारों का साहित्य अजर और अमर होता है जो अपने साहित्य से समाज को भटकने से बचाता और नई दिशा देंते रहने हैं।

संदर्भः–

1. आधुनिक हिन्दी नाटक डॉ. नगेंद्र – भुमिका से
2. डॉ. रामकुमार वर्मा की साहित्य साधना – डॉ. चंद्रिकाप्रसाद वर्मा पृ. 9
3. डॉ. रामकुमार वर्मा की साहित्य साधना – डॉ. चंद्रिकाप्रसाद वर्मा पृ. 27
4. वीर हमीर : डॉ. रामकुमार वर्माः पृ.7
5. वीर हमीर : डॉ. रामकुमार वर्माः पृ.10
6. वीर हमीर : डॉ. रामकुमार वर्माः पृ.61
7. चितौड़ की चिता – रामकुवार वर्मा पृ. 165
8. संत रैदासः डॉ. रामकुमार वर्मा पृ.83
9. संत रैदासः डॉ. रामकुमार वर्मा पृ.62